पाठ 16. सुभान खाँ

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य अंतर-वैयक्तिक संबंध का कौशल विकसित करना है ताकि वे विभिन्न व्यक्तियों/प्राणियों से सकारात्मक तरीके से जुड़ने की समझ पैदा कर सकें। ईश्वर को लेकर अलग-अलग धर्मों की राय अलग-अलग हो सकती है लेकिन मनुष्यता की परिभाषाएँ हर धर्म में मूलरूप से एक समान हैं। सुभान खाँ जैसे चरित्र हर समाज के लिए सांस्कृतिक धरोहर, प्रेम और भाईचारे के जीवंत प्रतीक हैं। सांप्रदायिक सद्भाव किसी भी बहुधर्मी समाज की सबसे बड़ी ताकत है।

पाठ का सार

रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखा-रचा गया संस्मरणात्मक रेखाचित्र अर्थात् जिसमें सुभान खाँ को लेकर यादें चित्र रूप में उभर कर आई हैं। इसमें लेखक ने बच्चों के मन में धर्म को लेकर जिस तरह की दूरियों की तस्वीरें छापी जा रही हैं, उनको हटाकर नई तस्वीर उभारने की कोशिश की है।

सुभान खाँ एक मिस्त्री हैं और अल्लाह के बंदे हैं। अपने काम को अल्लाह का काम समझकर करते हैं। वे बड़े मेहनती हैं। किसी दूसरे धर्म के छोटी-बड़ी उम्र वाले व्यक्तियों के लिए उनके मन में कोई दूरी नहीं है। वे बच्चों से बेहद प्यार करते हैं। काम करते हुए वे अल्लाह को कभी नहीं भूलते। लेखक अपने बचपन से मुसलमान बच्चों के साथ मुहर्रम के दिन ताज़िया निकालने में साथ रहे हैं। होली-दीपावली के अवसरों पर दादा सुभान खाँ का परिवार भी लेखक के परिवार की खुशियों में शामिल रहा है। मस्जिद बनी तो लेखक के मामा के बगीचे से उसके लिए लकड़ी निःशुल्क आई और मंदिर बनाने में सुभान खाँ पूरी तन्मयता से शामिल रहे। यह दर्शाता है कि गाँव में धार्मिक सहिष्णुता की जड़ें गहरी हैं।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  अलग-अलग धर्मों के होते हुए भी लोग कैसे एक दूसरे के प्रति कुर्बान हो जाते हैं। ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करते हुए पाठ की पहली सीढ़ी अर्थात् वाचन क्रम प्रारंभ किया जाना चाहिए। बीच-बीच में वाचनकर्ता परिवर्तित होते रहें। पाठ में आने वाले प्रसंगों का स्पष्टीकरण होता चले तो बेहतर। पाठांत में प्रश्नों के उत्तर। कुछ उत्तर पाठ में से ही बच्चे स्वयं चिह्नित करें। ऐसी उत्कंठा उनमें जगाई जानी चाहिए। जहाँ सहयोग आवश्यक हो, ज़रूर दें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 3** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - प्रत्यय वे शब्दांश हैं जो मूल शब्द के पीछे जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता प्रकट करते हैं। **इक, इन, इत,** आदि प्रत्यय वाले, पाठ से बाहर, किंतु प्रयोग में आते रहने वाले शब्दों से बच्चों को अवगत कराएँ।
  - वाक्यांश को पूरा करने के लिए उचित शब्दों का चयन, दो समान दिखने वाले शब्दों के बीच अर्थांतर तथा शब्दों के दो-दो अर्थों का अभ्यास कराएँ।

- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - ❖ 'खुलेआम यह लूट है, लूट सके तो लूट'–विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता कक्षा स्तर पर कराएँ। विषय की शब्दावली 'मेहनत की होती है जीत' भी हो सकता है। तैयारी समकालीन प्रश्नों के साथ होनी चाहिए जिससे बच्चों का बौद्धिक विकास भी हो और वे शब्दों से खेलना भी सीखें। छात्रों को मनुष्यता तथा भाईचारे का पाठ पढ़ाएँ।